सर्वनाम का प्रयोग

ये सर्वनाम हैं –

तद् – वह　　यद् – जो　　इदम् – यह

एतत् – यह　　किम् – क्या　　सर्व – सब

युष्मद् – तुम　　अस्मद् – मैं, हम　　अदस् – वह

मध्यम पुरुष के हैं बाकी प्रथम पुरुष के हैं।

Ex-

यह हँसता है।　　सब देख रहे हैं।

- अयं हसति।　　सर्वे पश्यन्ति।

विशेषण का प्रयोग

जो विशेषता बताता है, वह विशेषण कहलाता है।

Ex – सुन्दरः बालकः

विशेषण　विशेष्य

अव्यय का प्रयोग

↓

इन शब्दों का रूप कभी नहीं बदलता ।

च, वा, कुत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र.

च	वा	कुत्र	यत्र	तत्र	सर्वत्र
और	अथवा	कहाँ	जहाँ	वहाँ	सब जगह

यदा	तदा	कदा	तर्हि
जब	तब	कब	तो ।

यथा	तथा	पुनः
जैसा	वैसा	फिर

श्वः	ह्यः	अद्य	परश्वः
कल (आनेवाला) Tomarrow	कल (बीता) Yesterday	आज (Today)	परसों

Ex.

इस समय तुम कहाँ जा रहे हो?

इदानीं त्वं कुत्र गमिष्यासि?

कर्त्ता कारक
प्रथमा विभक्ति

क्रिया करने वाला कर्ता कहलाता है।
इसका चिह्न 'ने' होता है। कहीं-कहीं
यह चिह्न छिपा रहता है।

पुल्लिङ्ग, स्त्री०, नपु० बनाने के लिए प्रथमा
विभक्ति का प्रयोग होता है —

जैसे — तरः — पु०
तटी — स्त्री०
तटम् — नपु०

Ex— बालक जाता है।
बालकः गच्छति।
इदं एकं नगरम् अस्ति।
यह एक नगर है।

→ अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन
में प्रथमा विभक्ति होती है।

Ex. संस्कृत देवभाषा के नाम से प्रसिद्ध है।
" " कृत देवभाषा इति प्रसिद्धः अस्ति।
अशोक 'प्रियदर्शी' इस नाम से प्रसिद्ध था।
अशोक 'प्रियदर्शी' इति प्रसिद्धः आसीत्।

कर्म कारक

द्वितीया विभक्ति

कर्म पहचान Trick — (किसको / क्या) प्रश्न करने पर जो उत्तर आए वह कर्म।

जैसे - बालक: वानरं ताडयति।
बालक बंदर को पीटता है।
राम: पुस्तकं पठति।
राम पुस्तक पढ़ता है।

Ex - बालक ने नाटक देखा।
बालक: नाटकं अपश्यत्।

लड़कियाँ गीत गाती हैं।
बालिका: गीतं गायन्ति।

लड़के सूर्य को देखते हैं।
बालका: सूर्यं पश्यन्ति।

→ जब वाक्य में दुह् (दुहना) याच् (माँगना) पच् (पकाना) ब्रू (कहना) नी (ले जाना) हृ (चुराना) आदि 16 द्विकर्मक धातुएँ हों वहाँ द्वितीया विभक्ति होती है।

Ex- राम: दुग्धं दुहति।

→ अभित: (दोनों ओर) परित: (चारों ओर) समया (निकट)

निकषा (निकट) हा (हा!) प्रति (की ओर)

सर्वत: (सब ओर) उभयत: (दोनों ओर) धिक् (धिक्कार)

आदि के योग में द्वितीया होती है।

→ आधि उपसर्ग + शी (सोना) स्था - (ठहरना)

आस् (बैठना) आदि धातुओं के पहले लग जाए तो द्वितीया होगी ——

करण कारक

तृतीया विभक्ति

पहचान-चिह्न - के द्वारा/से

Ex —

राम गेंद से खेलता है।

रामः कन्दुकेन क्रीडति।

मैं मुँह से बोलता हूँ।

अहं मुखेन वदामि।

यदि — सह् - साथ
साकम् - साथ
सार्द्धम् - साथ
समम् - साथ आए तो तृतीया होगी।

Gyansindhu Coaching Classes

सीता नाक से फूल सूँघती है।	सीता नासिकया पुष्पं जिघ्रति।
मैं गेंद से खेलता हूँ।	अहं कन्दुकेन क्रीडामि।
मैं मुँह से बोलता हूँ।	अहं मुखेन वदामि।
हम सब आँखों से देखते हैं।	वयं नेत्राभ्यां पश्यामः।
किसान हल से खेत जोतता है।	कृषकः हलेन क्षेत्रं कर्षति।

. सीता राम के साथ वन गयी। – सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
. मैं पिताजी के साथ बाजार जाता हूँ। – अहं जनकेन सार्कं/समं आपणं गच्छामि।
. राम नेत्र से काणा है। – रामः नेत्रेण काणः अस्ति।
. पैर से लँगड़ा वह पुरुष चल नहीं सकता। – पादेन खञ्जः सः जनः चलितुं न शक्नोति।
. अर्जुन के समान धनुर्धारी नहीं था। – अर्जुनेन समः धनुर्धारी न आसीत्।
. सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। – सीतायाः मुखं चन्द्रेण तुल्यम् अस्ति।
. विवाद मत करो। – विवादेन अलम्।
. मूर्खों को पुस्तकों से क्या प्रयोजन? – मूर्खाणां पुस्तकैः किं प्रयोजनम्?

सम्प्रदान कारक

चतुर्थी विभक्ति

पहचान — के लिए/को।

कुछ प्रदान करने में चतुर्थी का प्रयोग।

Ex — मैं बालक के लिए गेंद लाऊँगा।

अहं बालकाय कन्दुकम् आनेष्यामि।

→ रुच् (अच्छा लगना), प्रसन्न होने में।

चाहने में, इच्छा करने में/

क्रुध् – क्रोध द्रुह् – द्रोह

ईर्ष्या – ईर्ष्या/जलन असूया – निन्दा/डाह

नमः स्वस्ति स्वाहा

स्वधा अलम् वषट्

आदि के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

मैं तेरे लिए पुस्तक लाऊँगा।	अहं तुभ्यं पुस्तकम् आनेष्यामि।
वह दरिद्रों को धन देता है।	सः दरिद्रेभ्यः धनं यच्छति।
राजा भिक्षुओं को भोजन देता है।	नृपः भिक्षुकेभ्यः भोजनं ददाति।
वे हमें फल देते हैं।	ते अस्मभ्यं फलानि यच्छन्ति।
वे दोनों राम के लिए जल लाते हैं।	तौ रामाय जलम् आनयतः।

Gyansindhu Coaching Classes
By Arunesh Sir

मुझे लड्डू अच्छे लगते हैं।	–	मह्यं मोदकाः रोचन्ते।
उसे पूआ अच्छा लगता है।	–	तस्मै अपूपः स्वदते।
पिता पुत्र पर गुस्सा होता है।	–	जनकः पुत्राय क्रुध्यति।
रावण राम से द्रोह करता है।	–	रावणः रामाय द्रुह्यति।
दुर्जन सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं।	–	दुर्जनाः सज्जनेभ्यः ईर्ष्यन्ति।
गुरु को नमस्कार।	–	गुरुवे नमः।
पुत्र का कल्याण।	–	पुत्राय स्वस्ति।
भूतों के लिए बलि।	–	भूतेभ्यः बलिः।
अग्नि के लिए स्वाहा।	–	अग्नये स्वाहा।

अपादान कारक
पञ्चमी विभक्ति

पहचान चिह्न — 'से' (अलग होना)

Ex — सः अश्वात् पतति।
वह घोड़े से गिरता है।

→ भी धातु (डरने) में, रक्षा करने में, दिशा में, इतर (दूसरा), दिशावचक, कालवाचक शब्दों में पञ्चमी होती है।

Ex —

मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत्	–	मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
छात्राः गृहात् आगच्छन्ति	–	छात्र घर से आते हैं।
अशोकः वृक्षात् अवतरति	–	अशोक पेड़ से उतरता है।
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति	–	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
कूपात् जलम् आनय	–	कुएँ से पानी लाओ।

Gyansindhu Coaching Classes

जनाः सिंहात् बिभ्यति	–	लोग सिंह से डरते हैं।
त्वं चौरात् बालं रक्ष	–	तुम चोर से बालक को बचाओ।
कृषकाः क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति	–	किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
बालकः अध्यापकात् गणितं पठन्ति	–	लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः	–	ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
गंगा हिमालयात् प्रभवति	–	गंगा हिमालय से निकलती है।

सम्बन्ध कारक
षष्ठी विभक्ति

पहचान — का, की, के, रा, री, रे।

उ॰- वह कृष्ण का भाई है।

सः कृष्णस्य भ्राता अस्ति।

कृष्ण वसुदेव के पुत्र थे।	–	कृष्णः वसुदेवस्य पुत्रः आसीत्।
राम भरत के बड़े भाई थे।	–	रामः भरतस्य ज्येष्ठः भ्राता आसीत्।
कौशल दशरथ की रानी थी।	–	कौशल्या दशरथस्य राज्ञी आसीत्।
रामू नरेश का नौकर है।	–	रामू नरेशस्य सेवकः अस्तिः।
कुएँ का जल मीठा है।	–	कूपस्य जलं मधुरम् अस्ति।
समुद्र का पानी खारा होता है।	–	समुद्रस्य जलं क्षारं भवति।
यह किसान का खेत है।	–	एतत् कृषकस्य क्षेत्रम् अस्ति।
हमारा विद्यालय नगर के मध्य है।	–	अस्माकं विद्यालयः नगरस्य मध्ये अस्ति।
रामायण के रचयिता वाल्मीकि हैं।	–	रामायणस्य रचयिता वाल्मीकिः अस्ति।
गंगा का जल पवित्र होता है।	–	गंगायाः जलं पवित्रं भवति।

अधिकरण कारक
सप्तमी विभक्ति

पहचान चिह्न — में, पर, ऊपर, पे।

→ कुशल, पटु, निपुण आदि के प्रयोग में।

→ जब किसी वस्तु की अपने समूह में विशेषता प्रकट हो।

Ex -

मैं आसन पर बैठा हूँ।	–	अहम् आसने उपविशामि।
वह नगर में रहता है।	–	सः नगरे वसति।
खेत में अन्न उत्पन्न होता है।	–	क्षेत्रे अन्नम् उत्पन्नं भवति।
तालाब में कमल खिलते हैं।	–	सरोवरे कमलानि विकसन्ति।
पात्र में जल है।	–	पात्रे जलम् अस्ति।
मैं सवेरे घूमता हूँ।	–	अहम् प्रातःकाले भ्रमणामि।
वे दो बजे यहाँ आये।	–	ते द्विवादनसमये अत्र आगच्छन्।
माँ बालक से प्यार करती है।	–	माता बालके स्निह्यति।
रमेश माँ के लिए अच्छा है।	–	रमेशः मातुः साधुः।

सम्बोधन

पहचान — हे, भो, अरे आदि

Ex —

अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?

भो पुत्र! त्वं कुत्र गमिष्यसि?

हे राम! मेरी रक्षा करो।

हे राम! पाहि माम्।

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
।। ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ।।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन्
प्रथमा	बालक:	बालकौ	बालका:
द्वतीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
त्रतीया	बालकेन्	बालकेभ्याम्	बालकै:
चतुर्थी	बालकाय	बालकेभ्याम्	बालकेभ्य:
पञ्चमी	बालकात्	बालकेभ्याम्	बालकेभ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
संबोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालका!